Notification No: COE/Ph.D/(Notification)588/2025

Date of Award: 24/10/2025

Name of Scholar: Megha

Name of Supervisor: Prof. Durga Prasad Gupta

Name of Department: Hindi, Faculty of Humanities and Language

Topic of Research: SAMKALEEN HINDI KATHA ALOCHANA KA STRIVADI ADHYAYAN

Findings

1. समकालीन हिंदी कथा आलोचना में स्त्रीवादी दृष्टिकोण ने आलोचना की पारंपरिक पद्धति को नई वैचारिक दिशा प्रदान की है। इसने साहित्य के मूल्यांकन में स्त्री-अनुभव, अस्मिता और लैंगिक समानता को केंद्र में स्थापित किया।
2. स्त्रीवाद केवल स्त्री अधिकारों का आंदोलन नहीं, बल्कि पितृसत्तात्मक सत्ता-संरचनाओं की आलोचना करने वाला व्यापक सामाजिक एवं वैचारिक विमर्श है। इसका उद्देश्य समानता, न्याय और मानवीय गरिमा की स्थापना करना है।
3. भारतीय और पाश्चात्य स्त्रीवादी चिंतन ने हिंदी कथा आलोचना को समृद्ध किया है। दोनों परंपराओं के सिद्धांतों ने स्त्री की स्वतंत्र पहचान, शिक्षा, समानता और सामाजिक अधिकारों के प्रश्नों को साहित्यिक विमर्श में स्थापित किया।
4. पौराणिक आख्यानों, मिथकों तथा धार्मिक-सांस्कृतिक संरचनाओं के स्त्रीवादी पुनर्पाठ से यह स्पष्ट हुआ कि स्त्री की पारंपरिक छवि पितृसत्तात्मक मूल्यों द्वारा निर्मित की गई है। स्त्रीवादी आलोचना इन संरचनाओं का पुनर्मूल्यांकन करती है।
5. समकालीन हिंदी कथा आलोचना में स्त्रीवादी आलोचना ने साहित्य को केवल सौंदर्यपरक अभिव्यक्ति न मानकर सामाजिक परिवर्तन के प्रभावी माध्यम के रूप में स्थापित किया है।
6. प्रभा खेतान, रोहिणी अग्रवाल, अरविन्द जैन तथा सुधा सिंह जैसे आलोचकों ने हिंदी कथा आलोचना में स्त्रीवादी दृष्टिकोण को सैद्धांतिक और व्यावहारिक आधार प्रदान किया। इनके लेखन ने स्त्री-अस्मिता, सामाजिक न्याय और लैंगिक समानता को साहित्यिक विमर्श का प्रमुख विषय बनाया।
7. स्त्रीवादी आलोचना ने हिंदी कथा साहित्य में स्त्री पात्रों के अनुभव, संघर्ष, आत्मबोध और प्रतिरोध को आलोचना के केंद्र में स्थापित किया। इससे साहित्य की व्याख्या अधिक समावेशी और समाज-सापेक्ष बनी।
8. स्त्री भाषा का स्वरूप सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक अनुभवों से निर्मित होता है। समकालीन स्त्रीवादी लेखन ने भाषा को स्त्री-अभिव्यक्ति और प्रतिरोध का सशक्त माध्यम बनाया है।

9. हिंदी कथा आलोचना में स्त्रीवादी अध्ययन ने साहित्य और समाज के बीच नए संवाद की संभावनाएँ विकसित की हैं। इसने साहित्य को सामाजिक न्याय, लैंगिक समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
10. शोध से यह स्थापित होता है कि समकालीन हिंदी कथा आलोचना में स्त्रीवादी दृष्टिकोण भविष्य की साहित्यिक आलोचना के लिए एक सशक्त और प्रासंगिक पद्धति के रूप में उभरकर सामने आया है। यह हिंदी साहित्य में नए विमर्शों और अनुसंधान की संभावनाओं को विस्तृत करता है।